डॉ० करुणा राय
एसोशियेट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस० जी० जी० एस० कॉलेज
पटना सिटी
Email- karuna-1812@yahoo.co.in.

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा द्वितीयवर्ष
पत्र - चतुर्थ
हिन्दी साहित्य का इतिहास - इकाई 2:3
रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और रचनाकार

हिन्दी साहित्य में रीतिकाल (संवत 1700 से 1900) की अवधि में प्रमुख रूप से रीति से संबंधित रचनायें की गयीं। आप सब रीति का अर्थ जानते ही हैं फिर भी पुनः स्मरण के लिए यहाँ यह बता देना उचित है कि रीति का अर्थ है - प्रणाली, पद्धति, मार्ग, पंथ या शैली। रामचरित मानस की प्रसिद्ध चौपाई तो आपलोगों ने अवश्य सुनी होगी - "रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाये पर वचन न जाई।" यहाँ भी रीति का अर्थ यही है। एक परंपरा की ओर यह चौपाई संकेत करती है। हिन्दी साहित्य में रीति शब्द का अर्थ इस प्रकार है - "काव्य के किसी अंग रस, अलंकार आदि के लक्षण बताते हुए उसके उदाहरण के रूप में मौलिक छंद रचने के अर्थ में रीति को लिया जाता है।" संस्कृत के आचार्यों का अनुसरण करते हुए हिंदी कवियों ने रीति को अपने ढंग से स्वीकार किया है। आचार्य वामन ने तो रीति को काव्य की आत्मा माना है। काव्य शास्त्र के विद्वानों ने काव्य की रीतियों के अनुसार लक्षण ग्रंथ लिखे पुनः उसका उदाहरण देने के लिए पदों की रचना की। कुछ कवियों ने सिर्फ उदाहरण वाली कवितायें ही लिखीं। और कुछ कवियों ने सारे शास्त्रीय बंधनों से दूर (परे) रहकर काव्य साधना की। रीति काल में श्रृंगार रस से अलग अन्य रसों को भी अपनाकर काव्य रचे गये। इस तरह रीतिकाल में रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त तथा वीर रस और भक्ति रस की रचनाएँ प्राप्त होती हैं। आपको इन सभी प्रवृत्तियों की जानकारी दी जा रही है -

<u>रीतिबद्ध कवि</u> - हिन्दी में काव्य रचना प्रणाली अर्थात रस, अलंकार, गुण, ध्वनि, नायिका भेद आदि के काव्यशास्त्रीय आधार पर रचना करनेवाले कवियों को रीतिबद्ध कवि कहा गया। इन कवियों ने पहले ब्रजभाषा में रस आदि के लक्षणों का निरूपण किया। इसके बाद उदाहरण स्वरूप अपने छंद रचे। रीतिकाल में ऐसे कवियों की संख्या सर्वाधिक थी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में इन कवियों को 'रीतिग्रंथकार कवि' कहा है। रीतिबद्ध कवियों ने कलापक्ष पर विशेष बल दिया है। इन कवियों में शुक्ल जी ने 57 नाम गिनाये हैं, आप लोग कुछ मुख्य कवियों के नाम लिख लें - चिंतामणि त्रिपाठी, बिहारीलाल, मतिराम, भूषण, बेनी, बेनी प्रवीन, पद्माकर भट्ट, देव, मंडन, जसवंत सिंह। कुछ लोगों ने बिहारी को इस सूची से अलग माना है क्योंकि उन्होंने लक्षण ग्रन्थ नहीं लिखा है पर उसके अंतर्गत उनके दोहे आ जाते हैं इसलिए बिहारी को इस सूची में भी स्थान मिलना चाहिए।

रीतिसिद्ध कवि - जिन कवियों ने लक्षण और उदाहरण शैली पर काव्य रचना तो नहीं की पर रचना करते समय उनके अवचेतन मानस पर लक्षण ग्रंथों का प्रभाव अवश्य रहा, उन्हें रीतिसिद्ध कवि कहा गया है। बिहारीलाल, बेनी बाजपेयी, रसनिधि, नेवाज, हठी जी, द्विजदेव, सेनापति, वृंद आदि रीतिसिद्ध कवियों में गिने जाते हैं। इस धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि निर्विवाद रूप से बिहारी ही हैं। उनके दोहों में श्रृंगार रस की संपूर्ण भंगिमायें चित्रित हैं। साथ ही सामाजिक - राजनीतिक जीवन के हर पहलू को भी उन्होंने दर्शाया है। रीतिसिद्ध कवियों को आचार्य बनने की अभिलाषा नहीं थी। इन्होंने अपना सारा ध्यान काव्य कौशल को प्रदर्शित करने तक सीमित रखा है। इनकी कविताओं में स्वानुभूति की झलक मिलती है। यह मुक्तक शैली का काव्य प्रस्तुत करते हैं। इस क्षेत्र में ये विद्यापति, चंडीदास, सूरदास, रहीम, तुलसीदास आदि कवियों से प्रभावित हैं। दरबारी कवि होने के कारण तत्कालीन सामंती परिवेश का भी इन पर प्रभाव पड़ा है। विलासप्रधान होने के कारण रीतिसिद्ध कविता नारी के रूप के आकर्षण से बँधी है फिर भी इसका क्षेत्र विस्तृत है। श्रृंगार के नख-शिख, भक्ति (ईश्वर की), प्रशस्ति (राजाओं की) नीति, ज्ञान वैराग्य और प्रकृति के आलंबन उद्दीपक रूपों का वर्णन भी इनकी कविताओं में मिलता है।

रीतिमुक्त कवि - जिन कवियों ने रीति की अपेक्षा स्वच्छंद भाव को विशेष महत्व दिया, वे रीतिमुक्त कवि कहलाये। उन्होंने काव्य रीति से अधिक स्वच्छंद भाव को महत्त्व दिया। काव्य लक्षण के उदाहरण के रूप में कवि-कर्म करने के बंधन से जो कवि मुक्त हो गए, उन्हें 'रीतिमुक्त कवि' कहा गया। रामचंद्र शुक्ल ने इन कवियों के बारे में लिखा है - "रसखान, घनानंद, आलम, ठाकुर आदि जितने प्रेमोन्मत्त कवि हुए हैं, उनमें से किसी ने लक्षणबद्ध रचना नहीं की।" रीति मुक्त धारा के कवियों ने साधन की तुलना में साध्य पर अधिक ध्यान दिया। वे बुद्धि द्वारा संचालित न होकर प्रगाढ़ भावना के द्वारा संचालित होते थे। वे मानते थे कि कविता करना खेल नहीं है। शब्दों की क्रीड़ा मात्र नहीं है कविता बल्कि भावुक हृदय का उद्गार है। घनानंद की कविताओं को समझने की क्या योग्यतायें हैं इसके बारे ब्रजनाथ लिखते हैं -

नेही महा ब्रजभाषा प्रवीन औ, सुंदरतानि के भेद को जानै।
जोग - वियोग की रीति में कोविद, भावना भेद स्वरूप को ठानै।
चाह के रंग में भीज्यौ हियौ, बिछुरैं मिले प्रीतम सांति न मानै।
भाषा-प्रवीन, सुछंद सदा रहै, सो घनजू के कवित्त बखानै॥

प्रसिद्ध रीतिमुक्त कवियों के नाम इस प्रकार हैं - ठाकुर, घनानंद, आलम, ठाकुर, बुद्धिसेन, (बोधा) राजा मानसिंह, ठाकुर नाम से दो और कवि मिलते हैं। राजा मानसिंह द्विजदेव नाम से कविता लिखते थे।

रीतिकालीन कविता की धारा रीति के अलावा और भी क्षेत्रों में प्रवाहित हुई। इस काल में वीरकाव्य भी लिखे गये। भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल दोनों राजाओं की वीरता का वर्णन किया है। कविराज सोमनाथ और पद्माकर ने भी वीर-काव्यों रचना की है। मान कवि और सूदन वीर काव्य की कविताओं के लिए रीति काल में प्रसिद्ध हैं। भक्ति काव्य की परंपरा भी रीतिकाल में चलती रही। यार मुहम्मद, दरिया साहब, जगजीवनदास, कासिमशाह, नूरमुहम्मद, गुरु गोविन्द सिंह, गुमान मिश्र, ब्रजवासी दास आदि कवियों ने भक्तिपरक कविताएँ लिखी हैं। वृंद ने नीति परक कविताओं की रचना की है जिसमें जीवन को सफल बनाने के लिये किस मार्ग पर चलना चाहिए यह उल्लेखित है।

प्रमुख रीतिकालीन कवि - रीति काल के प्रमुख कवियों का नाम उस काल की प्रवृत्तियों के बारे में बताते समय प्रसंगवश किया गया है। यहाँ आपलोगों के लिए पुनः कुछ प्रमुख कवियों का नाम और उनका परिचय दिया जा रहा है—

केशवदास - (सन- 1560 - 1601 ई०) - ये भक्तिकाल और रीतिकाल के मध्य की सीमा रेखा पर खड़े हैं। ये साहित्य में आचार्य, महाकवि तथा इतिहासकार के रूप में छाये हुए हैं। उन्होंने रीतिकालीन कविता की सभी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व अपनी रचनाओं में किया है। उदाहरण के रूप में - रस (रसिकप्रिया), अलंकार (कविप्रिया) छंद और भक्ति (रामचंद्रिका) वीरों की प्रशंसा वाले काव्य (वीर सिंह देवचरित, जहांगीर जस चंद्रिका, रतन बावनी) वैराग्य (विज्ञान गीता) का नाम लिया जा सकता है। वे रसिक प्रकृति के थे। बूढ़े होने के बाद एकबार वे कहीं जा रहे थे। रास्ते में पनघट पर नारियों से पानी माँगा तो उन्होंने आदर से 'बाबा' कहकर उन्हें संबोधित किया और पानी भी पिलाया। इस पर केशव ने एक दोहा कहा - 'केशव केशनि अस करी, बैरिन हूँ न कराहिं।
चंद्रवदन मृगलोचनि, बाबा कहकह जाहिं।"

अर्थात् केशव कवि कहते हैं कि इन (सफेद) केशों ने मेरी यह जो दुर्गति कराई है वह वैरी (शत्रु) भी नहीं कराते। चंद्र के समान वदन (मुख) वाली और हिरणों जैसी आँखोंवाली (युवतियाँ) मुझे बाबा-बाबा कहकर चली जा रही हैं।"

मतिराम - (1617 ई० से 1736 ई०) - ये चिंतामणि कवि तथा भूषण कवि के भाई थे। ये रीतिकाल की प्रवृत्तियों - रस अलंकार तथा छंद के निरूपक आचार्यों की श्रेणी में आते हैं। इनका ग्रंथ ललितललाम 'छंदसार' और सतसई है। इनके काव्य में स्वाभाविकता और सरलता है। उन्होंने लोकजीवन के श्रृंगारिक भाव को कविता की विषय वस्तु बनाया। इसलिए इनकी नायिकायें किसी राजघराने की राजकुमारियों से नहीं मिलती बल्कि आस-पास के वातावरण से ली गई लगती हैं।

भूषण 1613 – 1705 ई० भूषण ने शिवाजी महाराज की वीरता का आँखों देखा वर्णन किया है। इससे स्पष्ट है कि वे शिवाजी के समकालीन थे। 'शिवा-बावनी', 'शिवराज भूषण' और 'छत्रसाल दशक' इनकी प्रसिद्ध रचनायें हैं। इन रचनाओं में वीर रस के अलावा, अद्भुत, भयानक, वीभत्स और रौद्र रसों का भी समावेश है। उनकी रचनायें मुक्तक हैं। उन्होंने दो राजाओं के दरबार में आश्रय लिया। उनकी दुविधा है कि – 'शिवा को बखानों कि बखानों छत्रसाल कों।" वे अत्याचार के विरुद्ध खड़े होनेवाले राजा के साथ खड़े हैं।

देव – 1673 ई० – 1767 ई० . इनकी प्रमुख रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं – भावविलास, कुशलविलास, प्रेमतरंग, भवानी विलास, रस विलास, जाति विलास, अष्टयाम, प्रेमचंद्रिका, देवचरित्र, सुजान विनोद आदि। इनके कुल 72 ग्रंथ बताये जाते हैं जिनमें से शुक्ल जी ने 25 ग्रंथों को प्रामाणिक माना है। उसमें से भी 15 ही रचनायें उपलब्ध हैं। इन्हें बिहारी या भूषण की तरह उन्हें आश्रयदाता राजा नहीं मिले अत: विवश होकर इन्होंने कई राजदरबारों की धूल फाँकी। देव आचार्य और कवि थे। उनके काव्य में मानव मनोभाव का अत्यंत सूक्ष्मतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। उन्होंने श्रृंगार के दोनों रूपों संयोग तथा वियोग का मार्मिक चित्रण किया है। सौंदर्य वर्णन, भावुक प्रसंगों का चित्रण तथा विविध चेष्टाओं का अंकन इनकी विशेषता है। ये रीतिकाल के प्रतिनिधि माने जाते हैं। अर्थ ज्ञान में आई कठिनाइयों के कारण देव को 'कठिन काव्य का प्रेत' भी कहा गया है।

भिखारीदास 1721 – 1807 ई० - इनकी मृत्यु तिथि के बारे में निश्चयपूर्वक कुछ कहा नहीं जा सकता पर यह निर्विवाद है कि वे 1807 ई० तक कवितायें करते रहे अत: इस अवधि के बाद ही इनकी मृत्यु हुई होगी। रीति काव्य में भिखारीदास का महत्व कवि और आचार्य दोनों रूपों में है। काव्यांग निरूपण में भी इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इनके ग्रंथों में – 'रस सारांश', 'श्रृंगार निर्णय', 'काव्य निर्णय' का स्थान ऊँचा है। इन ग्रंथों में छंद, रस, अलंकार, रीति, गुण, दोष, शब्द शक्ति आदि का महत्वपूर्ण स्थान है।

पद्माकर 1753 – 1833 ई० – इनके प्रमुख ग्रंथ इस प्रकार हैं – 'जगत विनोद' 'हिम्मत बहादुर', 'हितोपदेश', 'रामरसायन', 'गंगालहरी' 'पद्माभरण' इत्यादि। ये रीतिकाल के प्रमुख आचार्यों में से एक हैं। उनकी कविताओं में उल्लास और आनंद का चित्रण है। पद्माकर की नूतन कल्पना, दृश्य चित्रण और भाषा की प्रशंसा रामचंद्र शुक्ल ने भी की है। इनकी भाषा में प्रवाह है और व्याकरण के दोषों से वह मुक्त है। पद्माकर की कविता में - भाव, रूप, और हृदयग्राही चेष्टाओं की अत्यंत मार्मिक अभिव्यक्ति है। उनकी भाषा में चित्र खींचने की क्षमता (बिंब निर्माण की कला) प्रशंसनीय है।

बिहारी — 1595 — 1664 ई० बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक चर्चित (5)
और प्रतिष्ठित कवि हैं। इनकी कीर्ति का आधार है इनका एक मात्र ग्रंथ – 'बिहारी सतसई' जिसके नीति विषयक, भक्ति और आध्यात्मिक परक तथा शृंगारिक दोहे हैं। ब्रजभाषा में लिखे गये इस काव्य के बारे में प्रसिद्ध है कि इनके आश्रय दाता महाराज जयसिंह ने एक-एक दोहे पर एक-एक अशर्फी दी। इनकी रचना की कई टीकाएँ (अर्थ सहित व्याख्या) की गई हैं। मुक्तक कविता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण उनके दोहों में मिलता है। उनके दोहे अलंकारों के उदाहरण में अनेक पढ़े पढ़ाये जाते हैं। बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए भी बिहारी ने उच्च साहित्यिक प्रभाव छोड़ा है। उनके बारे में श्रेष्ठ आलोचकों ने जितनी प्रशंसा की है, उसे एकत्रित किया जाय तो एक ग्रंथ की रचना हो सकती है। बिहारी ने कृष्ण और राधा की भक्ति की है। इनका यह दोहा अत्यंत प्रसिद्ध जो उन्होंने मंगलाचरण के रूप में लिखा है –

मेरी भवबाधा हरौ राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परैं, श्याम हरित दुति होई।।

बिहारी की कविता का मुख्य विषय शृंगार है। वियोग वर्णन में वे अतिशयोक्ति से काम लेते हैं। इसलिए वियोग वर्णन मार्मिक नहीं हो पाया है। विरह में व्याकुल नायिका की दुर्बलता इतनी बढ़ गई है कि वह साँस लेने और छोड़ने में छह-सात हाथ आगे पीछे चली जाती है — इति आवत चली जात उत, चली छ सातक हाथ।
चढ़ि हिंडोरे सी रहे, लगी उसासनु साथ।

एक और उदाहरण देखें। वियोग की आग से नायिका का शरीर इतना गर्म हो गया है कि उस पर डाला गया गुलाब जल बीच में ही सूख जाता है –

"औंधाई शीशी सुलखि, बिरह बिथा बिलसात।
बीचहिं सूखि गुलाब गो, छींटों छुओ न गात।।

बिहारी के दोहे अत्यंत प्रसिद्ध हैं। उनके बारे में कहा जाता है कि वे देखने में छोटे हैं पर हृदय को भेदने में समर्थ हैं।

घनानंद – 1689 – 1760 – कवि घनानंद दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के मीर मुंशी थे। कहते हैं कि सुजान नामकी स्त्री से उनका अटूट प्रेम था। ... प्रेम में बाधा पहुँचने पर वे उदासीन हो गये और निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित होकर भक्त के रूप में जीवन-निर्वाह करने लगे। उनकी रचनाओं द्वारा प्रेम की अंतर्वृत्तियों के उद्घाटक उद्घाटन हुआ है। संयोग और वियोग की रीति के वे महापंडित बताये जाते हैं। उन्होंने अपने बारे में और अपनी कविताओं के बारे बड़े ही आत्मविश्वास से कहा है कि 'लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत' जब रीति काल के अन्य कवि प्रेम के बाहरी तत्त्वों का चित्रण कर रहे थे तब घनानंद ने 'प्रेम की पीर' की अनुभूति करायी।

~~बोधा (बुद्धसिंह) (बुद्धिसेन) 176 1710–1749~~

बोधा – (बुद्धिसेन) 1710 – 1749 – हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन कवि थे। उन्हें वियोग शृंगार की कविताओं के लिए जाना जाता है। इनकी प्रेमिका सुभान थी। उसके प्रति प्रेम का प्रदर्शन करने के कारण उन्हें राज्य से बाहर कर दिया गया। इन्होंने 'विरह वारीश' और 'इश्कनामा' नामक दो पुस्तकों की रचना की। वे आत्मसम्मान के धनी थे। प्रेम के अतिरिक्त इनका जिक्र आत्मसम्मान की अभिव्यक्ति के लिए भी होता है – उन्होंने लिखा है – दाता कहा, सूर कहा, सुंदर सुजान कहा, आपको न चाहे ताके बाप को न चाहिए।'

आलम ~~1683 – 1723 ई०~~ 1623 – 1663 ई० – कहा जाता है कि आलम पहले ब्राह्मण थे शेख नामक रंगरेजिन के प्रेम में मुसलमान हो गये। इस शेख ने उनके एक दोहे की दूसरी पंक्ति लिखी थी। वह प्रसिद्ध दोहा इस प्रकार है – कनक छरी सी कामिनी काहे को कटि छीन।
कटि को कंचन काट विधि कुचन मध्य धरि दीन॥

उनकी कविताओं का संग्रह आलमकेलि के नाम से प्रसिद्ध है।

ठाकुर – हिन्दी साहित्य के इतिहास में तीन कवि ठाकुर नामधारी हुए हैं जिनमें से दो असनी के ब्रह्मभट्ट थे और एक बुंदेलखंड के कायस्थ थे। ये तीसरे ठाकुर ही रीतिमुक्त धारा के प्रसिद्ध कवि हैं। इनकी कविता बड़ी ही सरस और सरल है। इनकी दो रचनाएँ उपलब्ध हैं – 'ठाकुर शतक' और 'ठाकुर ठसक'। ये लोकजीवन से जुड़े कवि हैं इसलिए लोकजीवन के प्रसंगों का इन्होंने अच्छा चित्रण किया है। इनकी भाषा भी लोकोक्तियों से पूर्ण है।

इस तरह आपने हिन्दी साहित्य के रीतिकाल की तीन धाराओं (1) रीतिबद्ध (2) रीतिसिद्ध तथा (3) रीतिमुक्त कवियों का परिचय प्राप्त कर लिया है। साथ ही, रीतिकाल के प्रमुख कवियों के बारे में भी जान चुके हैं। रीतिकाल के कवि सामान्य पृष्ठभूमि के हैं किन्तु राज्याश्रय के लिए उन्हें सामन्तवादी संस्कृति के अनुरूप कवितायें लिखनी पड़ीं। इसीलिए रीतिकालीन कविता जिस संस्कृति की उपज थी, उसपर तत्कालीन दरबारों का गहरा प्रभाव पाया जाता है।

[signature]
विभागाध्यक्ष - हिन्दी विभाग
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह कालेज.
पटना सिटी
संपर्क संख्या - 9431881251